

जो आत्मा को झकझोर दे, वह वार्तविक ज्ञान : पद्मश्री डॉ कपिल तिवारी

ख्रांजा एक्सप्रेस संवाददाता

भोपाल । माखनलाल चतुर्वेदी राशीय पत्रकरिता एवं सचार विश्वविद्यालय में शुक्रवार को दादा माखनलाल चतुर्वेदी जी की जयंती पर पद्मश्री डॉ. कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों के वार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 का शुभांग भी किया गया। वहीं विश्वविद्यालय की वेबसाइट को रीलांच किया गया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो समाचार पत्र विकल्प एवं पहल का भी विमोचन मुख्य अंतिथि एवं कुलगुरु द्वारा किया गया। मुख्य अंतिथि एवं वक्ता पद्मश्री से अलंकृत भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक संस्कृति के मर्मज्ञ डॉ. कपिल तिवारी ने भारत ज्ञान परंपरा की भूमि- विषय पर अपने विचारों से छात्रों और शिक्षकों के लिए आत्मचंतन और बौद्धिक चेतना के नए द्वार खोले। डॉ. कपिल तिवारी ने अपने उद्घोषन में कहा कि- भारत की ज्ञान परंपरा सदियों की तपस्या से जन्मी है। इस देश में ज्ञान अर्जन का अर्थ के बल जानकारी नहीं, आत्मबोध है। उन्होंने



एमसीयू में व्याख्यान एवं प्रतिभा 2025 का भव्य शुभांग

कहा कि आज ज्ञान को सूचना भर समझ लिया गया है, जबकि वास्तविक ज्ञान वह है जो आत्मा को झकझोर दे और जीवन की दिशा तय कर दे। उन्होंने शिक्षण व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि- हमारे देश में 90 प्रतिशत लोग अपनी सभावनाओं को पहचान ही नहीं पाते। शिक्षा संस्थानों में यह प्रश्न ही नहीं पूछा जाता कि तुम कौन हो और क्या करने के लिए इस धरती पर आए हो। उन्होंने कहा कि

गणेश शंकर विद्यार्थी सभागर में आयोजित कार्यक्रम में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वागत भाषण में कहा कि +यह विश्वविद्यालय के बल डिग्रीयाँ देने का केंद्र नहीं है, यह आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है। उन्होंने कहा कि वे हर महीने में एक बार डॉ. कपिल तिवारी से भेट करते हैं और भविष्य में वे स्वयं कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों से संवाद करेंगे। कुलगुरु ने छात्रों को आत्ममंथन करते हुए कहा कि वे यह सोचें हम यहाँ क्यों आए हैं? और हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है? कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. उर्वशी परमार एवं डॉ. अरुण कुमार खोबरे ने किया। आभार प्रदर्शन विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अविनाश वाजपेयी द्वारा किया गया। खेल प्रतियोगिताओं का शुभांग

प्रतिभा 2025 में खेल कूद गतिविधियों के अंतर्गत क्रिकेट की भी शुरुआत हुई। जिसमें वरिष्ठ खेल पत्रकार अक्षत शर्मा विशेष रूप से शामिल हुए। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर खेल समन्वयक डॉ सतेंद्र डहेरिया, सह खेल समन्वयक डॉ मनोज पटेल एवं शिक्षक उपस्थित थे।

जो आत्मा को झकझोर दे, वह वास्तविक ज्ञान : पद्मश्री डॉ कपिल तिवारी

■ ओमपाल, लोकदेश रिपोर्टर

माधवनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकरिता एवं संचार विश्वविद्यालय में शुक्रवार को द्यावा माखनलाल चतुर्वेदी जी की जयती पर प्रश्नावाहन हुआ। कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपूरुष विजय मनोहर तिवारी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सास्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों के वापिक आयोजन प्रतिभा 2025 का शुभारंभ भी किया गया।

वर्ती विश्वविद्यालय की बैठकाइट को रोतारू किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो समाचार पत्र विकल्प एवं पहल का भी विमोचन मुख्य अंतिथि एवं कुलपूरुष द्वारा किया गया।

मुख्य अंतिथि एवं वक्ता पद्मश्री से अलंकृत भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक संस्कृति के ममज्ज डॉ. कपिल तिवारी ने रभारतः ज्ञान



परंपरा की भूमिक विद्या पर अपने विचारों से छात्रों और शिक्षकों के लिए आभारिचान और बोहिक चेतना के नाम द्वारा खेले। डॉ. कपिल तिवारी ने अपने उद्घोषन में कहा कि—भारत की ज्ञान परंपराएँ संरक्षितों की तपत्या से जर्मी है। इस रूप में ज्ञान का अर्थ केवल ज्ञानकरी नहीं, आत्मव्याध है। इन्होंने कहा कि आज ज्ञान को सूचना भर समझ लिया गया है, जबकि वास्तविक

ज्ञान वह है जो आत्मा को झकझोर दे और जीवन की दिशा तय कर दे। उन्होंने शिक्षण व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि— हमारे देश में 90 प्रतिशत लोग अपनी संभावनाओं को छहचान ही नहीं पाते। शिक्षा संस्थानों में यह प्रगत ही नहीं पूछा जाता कि तुम कौन हो और क्या करने के लिए। इस धरती पर आए हो। इन्होंने कहा कि मनुष्य को उसको प्रकृति और

आत्मवोध व सामाजिक देताना की प्रयोगशाला है एमरीकूँ: कुलपूरुष

गणेश शंकर विद्यार्थी संबोधार में आयोजित कार्यक्रम में कुलपूरुष विजय मनोहर तिवारी ने स्वातंत्र्य भाषण में कहा कि इयाह विश्वविद्यालय केवल डिफिल्यू ले के द्वारा नहीं है, इत्यादी और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है। इन्होंने कहा कि वे हार्दिक रूप से एक बार डॉ. कपिल तिवारी से बैठ करते हैं और अभियाज्ञ में वे स्वयं कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों से संवाद करते हैं। कुलपूरुष ने छात्रों को आत्मनियन करते हुए कहा कि वे यह सोचें। हम यार्ड्स क्यों आए हैं? और इन्हाँरे जीवन का उद्देश्य क्या है? कार्यक्रम का संचालन श्री विद्यार्थी सामरीकर एवं डॉ. अरुण कुमार योग्य ले किया। सोयोजन सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. उर्ध्वी परमाण द्वारा किया गया। आगाम प्रस्तुति विश्वविद्यालय के कुलपूरुष डॉ. अविलाश वाजपेयी ने किया।

प्रतिभा के अनुसार दिशा देना ही शिक्षा का सबके लिए होता है।

खेल प्रतिभागिताओं का शुभारंभ: प्रतिभा 2025 में खेल कूट गतिविधियों के अंगत ड्रिक्केट की भी शुरूआत हुई। जिसमें वरिष्ठ खेल प्रतिभागियों का उत्तराख करते हुए कहा कि यह सब भारत की वैचारिक विविधता और गहराई का प्रमाण है। उन्होंने बुद्ध, नागर्जुन आदि चित्रकों की परंपरा की व्याख्या की और कहा कि— रजन किसी एक जाति या वर्ग की वैष्णी नहीं होता, वह तो सूखे के प्रकाश की तरह

भोपाल, 05 अप्रैल 2025
www.dainikjagranmpcg.com

संक्षिप्त समाचार

एमसीयू में व्याख्यान व प्रतिभा 2025 का भव्य शुभारंभ



भोपाल। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में शुक्रवार को दादा माखनलाल चतुर्वेदी की जयंती पर डॉ. कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों के वार्षिक आयोजन प्रतिभा का भी शुभारंभ किया गया। वहाँ विश्वविद्यालय की वेबसाइट को रीलांच किया गया। साथ ही विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो समाचार पत्र विकल्प एवं पहल का भी विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि एवं वक्ता पद्मश्री से अलंकृत डॉ. कपिल तिवारी ने अपने उद्घोषण में कहा कि भारत की ज्ञान परंपरा सदियों की तपस्या से जन्मी है। इस देश में ज्ञान अर्जन का अर्थ केवल जानकारी नहीं, आत्मबोध है।

जो आत्मा को झकझोर दे, वह वारस्तविक ज्ञान - पद्मश्री डॉ कपिल तिवारी एमसीयू में व्याख्यान एवं प्रतिभा 2025 का भव्य शुभारंभ



भोपाल | आज तक 24

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में शुक्रवार को ददा माखनलाल चतुर्वेदी जी की जयंती पर पदाश्री डॉ. कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों के वार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 का शुभारंभ भी किया गया। वहीं विश्वविद्यालय की वेबसाइट को रीलांच किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो समाचार पत्र +विकल्प+ एवं +पहल+ का भी विमोचन मुख्य अतिथि एवं कुलगुरु द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि एवं वक्ता पदाश्री से अलंकृत भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक संस्कृति के मर्मज्ञ डॉ. कपिल तिवारी ने भारत-ज्ञान परंपरा की भूमि-

विषय पर अपने विचारों से छात्रों और शिक्षकों के लिए आत्मचिंतन और बौद्धिक चेतना के नए द्वार खोले। डॉ. कपिल तिवारी ने अपने उद्घोषण में कहा कि—भारत की ज्ञान परंपरा सदियों की तपस्या से जन्मी है। इस देश में ज्ञान अर्जन का अर्थ केवल जानकारी नहीं, आत्मबोध है। उन्होंने कहा कि आज ज्ञान को सूचना भर समझ लिया गया है, जबकि वास्तविक ज्ञान वह है जो आत्मा को झकझोर दे और जीवन की दिशा तय कर दे। उन्होंने शिक्षण व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि—+हमारे देश में 90 प्रतिशत लोग अपनी संभावनाओं को पहचान ही नहीं पाते। शिक्षा संस्थानों में यह प्रश्न ही नहीं पूछा जाता कि तुम कौन हो और क्या करने के लिए इस धरती पर आए हो।+ उन्होंने कहा कि मनुष्य को उसकी प्रकृति और प्रतिभा के अनुसार दिशा देना ही शिक्षा का असल उद्देश्य होना चाहिए। डॉ. तिवारी ने भारत की

वैचारिक परंपराओं—जैसे अद्वैत, बौद्ध दर्शन, लोक परंपराएं और जनजातीय जीवन—का उल्लेख करते हुए कहा कि यह सब भारत की वैचारिक विविधता और गहराई का प्रमाण है। उन्होंने बुद्ध, नागार्जुन आदि चिंतकों की परंपरा की व्याख्या की और कहा कि—+ज्ञान किसी एक जाति या वर्मांकी बपौती नहीं होता, यह तो सूर्य के प्रकाश की तरह सबके लिए होता है।

आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है एमसीयू-कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी। - गणेश शंकर विद्यार्थी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वागत भाषण में कहा कि—+यह विश्वविद्यालय केवल डिग्रियाँ देने का केंद्र नहीं है, यह आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है।+ उन्होंने कहा कि वे हर महीने में एक बार डॉ. कपिल तिवारी से भेट करते हैं और भविष्य में वे स्वयं

कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों से संवाद करें। कुलगुरु ने छात्रों को आत्ममंथन करते हुए कहा कि वे यह सोचें—हम यहाँ क्यों आए हैं?+ और +हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है? कार्यक्रम का संचालन श्री विवेक सावरीकर एवं डॉ. अरुण कुमार खोबरे ने किया। संयोजन सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. उवंशी परमार द्वारा किया गया। आभार प्रदर्शन विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अविनाश बाजपेयी ने किया।

खेल प्रतियोगिताओं का शुभारंभ - प्रतिभा 2025 में खेल कूद गतिविधियों के अंतर्गत क्रिकेट की भी शुरुआत हुई। जिसमें वरिष्ठ खेल पत्रकार अक्षत शर्मा विशेष रूप से शामिल हुए। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर खेल समन्वयक डॉ. सतेंद्र डहेरिया, सहखेल समन्वयक डॉ. मनोज पटेल एवं शिक्षक उपस्थित थे।



एनसीयू में त्यारत्यान और प्रतिभा 2025 का हुआ शुभारंभ

समय जगत, भोपाल। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में शुक्रवार को दादा माखनलाल चतुर्वेदी जी की जयंती पर पद्मश्री डॉ. कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों के वार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 का शुभारंभ भी किया गया। वहीं विश्वविद्यालय की वेबसाइट को रीलांच किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो समाचार पत्र विकल्प एवं पहल का भी विमोचन मुख्य अतिथि एवं कुलगुरु द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि एवं वक्ता पद्मश्री से अलंकृत भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक संस्कृति के मर्मज्ञ डॉ. कपिल तिवारी ने भारत-ज्ञान परंपरा की भूमि विषय पर अपने विचारों से छात्रों और

शिक्षकों के लिए आत्मचंतन और बौद्धिक चेतना के नए द्वारा खोले। डॉ. कपिल तिवारी ने अपने उद्घोषण में कहा कि भारत की ज्ञान परंपरा सदियों की तपस्या से जन्मी है। इस देश में ज्ञान अर्जन का अर्थ केवल जानकारी नहीं, आत्मबोध है। उन्होंने कहा कि आज ज्ञान को सूचना भर समझ लिया गया है, जबकि वास्तविक ज्ञान वह है जो आत्मा को झकझार दे और जीवन की दिशा तय कर दे। उन्होंने शिक्षण व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे देश में 90 प्रतिशत लोग अपनी संभावनाओं को पहचान ही नहीं पाते। शिक्षा संस्थानों में यह प्रश्न ही नहीं पूछा जाता कि तुम कौन हो और क्या करने के लिए इस धरती पर आए हो। उन्होंने कहा कि मनुष्य को उसकी प्रकृति और प्रतिभा के लिए होता है। गणेश शंकर



विद्यार्थी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वागत भाषण में कहा कि -यह विश्वविद्यालय केवल डिग्रीयाँ देने का केंद्र नहीं है, यह आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है। उन्होंने कहा कि वे हर महीने में एक बार डॉ. कपिल तिवारी से भेट करते हैं और भविष्य में वे स्वयं कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों से संवाद करें। कुलगुरु ने छात्रों को आत्ममंथन करते हुए कहा कि वे यह सोचें हम यहाँ क्यों आए हैं? और हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है?

कार्यक्रम का संचालन विवेक सावरीकर एवं डॉ. अरुण कुमार खोबरे ने किया। संयोजन सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. उर्वशी परमार द्वारा किया गया।

एमसीयू में व्याख्यान
एवं प्रतिभा 2025
का भव्य शुभारंभ

जो आत्मा को झकझोर दे, वह वार्तविक ज्ञान : पद्मश्री डॉ कपिल तिवारी



आम सभा, भोपाल। माधवनलाल चतुर्वेदी शास्त्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में शुभारंभ को दादा माधवनलाल चतुर्वेदी जी को जयते पर प्रकाशी डॉ. कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की संस्थानिक एवं खेलकूट गतिविधियों के बार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 का शुभारंभ भी किया गया। वर्ती विश्वविद्यालय की वेबसाइट को रीलांच किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो समाचार पत्र %विकल्प% एवं %पहल% का भी विमोचन मुख्य अंतिष्ठि एवं कूलगुरु द्वारा किया गया। मुख्य अंतिष्ठि एवं वक्ता पद्मश्री से अलंकृत भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक संस्कृति के मंत्रज्ञ डॉ. कपिल तिवारी ने %भारत ज्ञान परंपरा की भूमिका विषय पर अपने विचारों से छात्रों और

शिक्षकों के लिए आत्मचित्तन और बीड़िक चेतना के नए द्वार खोले। डॉ. कपिल तिवारी ने अपने झोड़न में कहा कि—%भारत की ज्ञान परंपरा सहितों की तपस्या से जन्मी है। इस देश में ज्ञान अर्जन का अर्थ केवल ज्ञानकरी नहीं, आमतौर है।% उन्होंने कहा कि आज ज्ञान को सूचना भर समझ लिया गया है, जबकि वास्तविक ज्ञान वह है जो आत्मा को झकझोर दे और जीवन की दिशा तय कर दे। उन्होंने शिक्षण व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि—हमारे देश में 90 प्रतिशत लोग अपनी संभावनाओं को पहचान ही नहीं पाते। शिक्षा संस्थानों में यह प्रश्न ही नहीं पूछा जाता कि तुम कौन हो और वया करने के लिए इस धरती पर आए हो। उन्होंने कहा कि मुख्य को उसकी प्रकृति और प्रतिभा के अनुसार दिशा देना ही शिक्षा का असल उद्देश्य होना चाहिए। डॉ. तिवारी ने भारत की वैचारिक परंपराओं—जैसे अहिं, बोढ़ दर्शन, लोक

परंपराएं और जनजातीय जीवन—का उल्लेख करते हुए कहा कि यह सब भारत की वैचारिक विविधता और महाईं ह का प्रमाण है। उन्होंने बुढ़, नामांकन असदि वित्तकों की परंपरा की व्याख्या की और कहा कि—%ज्ञान किसी एक जाति या वर्ग की वैपीड़ी नहीं होता, यह तो सूची के प्रकाश की तरह सबके लिए होता है।

आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है परम्परायूः कूलगुरु विजय मनोहर तिवारी: गणेश शंकर विद्यार्थी सभापाल में आयोजित कार्यक्रम में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वामान भाषण में कहा कि यह विश्वविद्यालय केवल विद्युतियों देने का केंद्र नहीं है, यह आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है। उन्होंने कहा कि ये हर महीने में एक बार डॉ. कपिल तिवारी से भेट करते हैं और भविष्य में वे स्वयं कश्शाओं में जाकर विद्यार्थियों से संवाद करें।

सातवां पोषण पखवाड़ा 8
से 22 अप्रैल तक

आम सभा, भोपाल। प्रदेश में व्यक्तिगत और समृद्धिवाली स्तर पर व्यवहार प्रतिवेदन के माध्यम से कृपापण को कम करने के लिए पोषण अभियान चलाया जा रहा है। प्रत्येक वर्ष पोषण अभियान के तहत पोषण को जन अंदोलन का स्वरूप देने के ऊर्जस से पोषण पखवाड़ा मनाया जाता है। इस पर सातवां पोषण पखवाड़ा 8 से 22 अप्रैल तक मनाया जाएगा। केंद्रीय महिला बाल विकास मंत्रालय द्वारा %जीवन के प्रथम 1000 दिवान% पोषण ट्रैकर में लाभार्थी मॉड्युल को लोकप्रिय बनाने व्यापक प्रचार-प्रसार, सम्मान आपारित पोषण प्रबोधन मॉड्युल के माध्यम से कृपापण का प्रबोधन तथा वच्चों में जीवों को दूर करने के लिए स्वरूप जीवन शैली को अपने पर बाल जैसे थीम पर केंद्रित विभिन्न कार्यक्रमों को आयोजित करने के निर्देश दिए गए हैं। पोषण पखवाड़ा के दौरान आमनवाड़ा केंद्र सेक्टर, परियोजना एवं जिला स्तर की गतिविधियों में स्थानीय प्रयोग संसाधनों को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण, समृद्धिक जागरूकता और पोषण संवेदनशील कार्यक्रम जैसे आयोजन किए जाएंगे। आमनवाड़ा केंद्रों में दैनिक गतिविधियों को तिथिवार थीम आधारित कैलेंडर तैयार किया गया है। सभी जिलों में पखवाड़ा के दौरान साइकिल रैली, पोषण रैली, प्रभात फेरी, नार्मदांती महिलाओं और शासी माता एवं किशोरी वालिकाओं के साथ पोषण ट्रैकर में हितग्राही मॉड्युल पर समूह चर्चा, कृपापण वच्चों की स्वास्थ्य जाच, एनोमिया जागरूकता शिविर का आयोजन किया जाएगा।

ज्ञान वह, जो आत्मा को झकझोर कर तय करे जीवन की नई दिशा



एमसीयू में कार्यक्रम के दैरान विवि के समाचार पत्र का विमोचन करते अतिथि। ● सौजन्य

नवदुर्निया प्रतिनिधि, भोपाल: भारत की ज्ञान परंपरा सदियों की तपस्या से जन्मी है। इस देश में ज्ञान अर्जन का अर्थ केवल जानकारी नहीं, आत्मबोध है। आज ज्ञान को सूचना भर समझ लिया गया है, जबकि वास्तविक ज्ञान वह है, जो आत्मा को झकझोर दे और जीवन की दिशा तय कर दे। यह बात पद्मश्री डा. कपिल तिवारी ने माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) में शुक्रवार को प. माखनलाल चतुर्वेदी की जयंती पर आयोजित व्याख्यान में कही। उन्होंने शिक्षण व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे देश में 90 फीसद लोग संभावनाओं को पहचान ही नहीं पाते।

शिक्षा संस्थानों में यह प्रश्न ही नहीं पूछा जाता कि तुम कौन हो और क्या करने के लिए इस धरती पर आए हो। उन्होंने कहा कि मनुष्य को उसकी प्रकृति और प्रतिभा के अनुसार दिशा देना ही शिक्षा का असल उद्देश्य होना चाहिए। डा. तिवारी ने भारत की वैचारिक परंपराओं-जैसे अद्वैत, बौद्ध दर्शन, लोक परंपराएं और जनजातीय जीवन का उल्लेख करते हुए कहा कि यह सब भारत की वैचारिक विविधता और गहराई का प्रमाण है।

उन्होंने बुद्ध, नागार्जुन आदि चिंतकों की परंपरा की व्याख्या की और कहा कि ज्ञान किसी एक जाति या वर्ग का नहीं होता, यह तो सूर्य के प्रकाश की तरह सभी के लिए होता है। कार्यक्रम की

- एमसीयू में व्याख्यान एवं प्रतिभा 2025 का किया गया शुभारंभ
- पद्मश्री डा. कपिल तिवारी ने कार्यक्रम में दिया व्याख्यान

खेल प्रतियोगिताओं का 'प्रतिभा' में शुभारंभ

प्रतिभा 2025 में खेलकूद गतिविधियों के अंतर्गत क्रिकेट की भी शुरुआत हुई। इसमें कुलगुरु ने सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर खेल समन्वयक डा. सरेद्र डहरिया, सह खेल समन्वयक डा. मनोज पटेल एवं शिक्षकगण उपस्थित थे।

अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। उन्होंने कहा कि यह विवि केवल डिग्रियां देने का केंद्र नहीं है, यह आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है। इस अवसर पर विवि की सांस्कृतिक व खेलकूद गतिविधियों के वार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 का शुभारंभ भी किया। वहाँ विवि की वेबसाइट को रीलांच किया। इस दैरान विवि से निकलने वाले दो समाचार पत्र 'विकल्प' और 'पहल' का भी विमोचन किया गया। संचालन विवेक सावरीकर एवं डा. अरुण कुमार खोबरे ने किया। वहाँ, आभार कुलसचिव डा. अविनाश वाजपेयी ने माना।

जो आत्मा को झकझार दे, वह वास्तविक ज्ञान : पद्मश्री डॉ कपिल तिवारी ■ एमसीयू में व्याख्यान एवं प्रतिभा 2025 का भव्य शुभारंभ



■ भारतीय सहारा

भोपाल(रावेद्वारा मिश्रा)। माखनलाल चतुरेंद्री राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में शुक्रवार को दादा माखनलाल चतुरेंद्री जी की जयती पर पद्मश्री डॉ. कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों के वार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 का शुभारंभ भी किया गया। वही विश्वविद्यालय की वेबसाइट को रीलांच किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो समाचार पत्र "विकल्प" एवं "पहल" का भी विमोचन मुख्य अतिथि एवं कुलगुरु द्वारा किया गया।

मुख्य अतिथि एवं वक्ता पद्मश्री से अलंकृत भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक संस्कृति के मर्मज्ञ डॉ. कपिल तिवारी ने "भारतः ज्ञान

परंपरा की भूमि" विषय पर अपने विचारों से छात्रों और शिक्षकों के लिए आत्मवित्तन और बौद्धिक चेतना के नए द्वार खोले। डॉ. कपिल तिवारी ने अपने उद्घोषण में कहा कि— "भारत की ज्ञान परंपरा सदियों की तपस्या से जन्मी है। इस देश में ज्ञान अर्जन का अर्थ केवल जानकारी नहीं, आत्मबोध है।" उन्होंने कहा कि आज ज्ञान को सूखना भर समझ लिया गया है, जबकि वास्तविक ज्ञान वह है जो आत्मा को झकझार दे और जीवन की दिशा तथ कर दे। उन्होंने शिक्षण व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि— "हमारे देश में 90 प्रतिशत लोग अपनी संभावनाओं को पहचान ही नहीं पाते। शिक्षा संस्थानों में यह प्रश्न ही नहीं पूछा जाता कि तुम कौन हो और क्या करने के लिए इस घरती पर आए हो।" उन्होंने कहा कि मनुष्य को उसकी प्रकृति और प्रतिभा के अनुसार दिशा देना ही शिक्षा का असल उद्देश्य होना

चाहिए। डॉ. तिवारी ने भारत की वैचारिक परंपराओं—जैसे अद्वैत, बौद्ध दर्शन, लोक परंपराएं और जनजातीय जीवन—का उल्लेख करते हुए कहा कि यह सब भारत की वैचारिक विविधता और गहराई का प्रमाण है। उन्होंने बुद्ध नागार्जुन आदि चिंतकों की परंपरा की व्याख्या की और कहा कि— "ज्ञान किसी एक जाति या वर्ग की बौती नहीं होता, यह तो सूर्य के प्रकाश की तरह सबके लिए होता है।"

आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है। एमसीयू : कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी। गणेश शंकर विद्यार्थी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वगत भाषण में कहा कि "यह विश्वविद्यालय केवल डिग्रीयों देने का केंद्र नहीं है, यह आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है।"

खेल प्रतियोगिताओं का शुभारंभ : प्रतिभा 2025 में खेल कूद गतिविधियों के अंतर्गत क्रिकेट की भी शुरूआत हुई। जिसमें वरिष्ठ खेल पत्रकार अक्षत शर्मा विशेष रूप से शामिल हुए। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर खेल समन्वयक डॉ. सरोद डहेरिया, सह खेल समन्वयक डॉ. मनोज पटेल एवं शिक्षक उपस्थित थे।

खेल प्रतियोगिताओं का शुभारंभ : प्रतिभा 2025 में खेल कूद गतिविधियों के अंतर्गत क्रिकेट की भी शुरूआत हुई। जिसमें वरिष्ठ खेल पत्रकार अक्षत शर्मा विशेष रूप से शामिल हुए। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर खेल समन्वयक डॉ. सरोद डहेरिया, सह खेल समन्वयक डॉ. मनोज पटेल एवं शिक्षक उपस्थित थे।

माखनलाल चतुर्वेदी जी की जयंती
पर एमसीयू में पद्मश्री डॉ. कपिल
तिवारी का व्याख्यान शुक्रवार को

वार्षिक उत्सव प्रतिभा का भी होगा भव्य शुभारंभ

नित्य नमन टाइम्स | भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय माखनपुरम परिसर बिशनखेड़ी में शुक्रवार को दादा माखनलाल चतुर्वेदी जी की जयंती पर व्याख्यान एवं वार्षिक उत्सव प्रतिभा 2025 का भव्य शुभारंभ होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं वक्ता पद्मश्री से अलंकृत, भारतीय ज्ञान परम्परा और लोक संस्कृति के मर्मज्ञ चिंतक और विचारक डॉ. कपिल तिवारी होंगे। जयंती प्रसंग पर भारत-ज्ञान परम्परा की भूमि विषय पर श्री तिवारी अपने विचार व्यक्त करेंगे। गणेश शंकर विद्यार्थी सभागार में होने वाले इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी करेंगे। इस पुनीत अवसर पर विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों का वार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 का भी भव्य शुभारंभ होगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा पर एमसीयू में व्याख्यान

भोपाल. माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विवि में शुक्रवार को दादा माखनलाल चतुर्वेदी की जयंती पर पद्मश्री डॉ. कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। व्याख्यान में 'भारतः ज्ञान परंपरा की भूमि' विषय पर डॉ. कपिल ने अपने विचारों से छात्रों के लिए आत्मचिंतन और बौद्धिक चेतना के नए द्वार खोले। कार्यक्रम की अध्यक्षता विवि के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। वक्ता डॉ. कपिल तिवारी ने कहा कि ज्ञान एक अनूठी घटना है जो सूर्य की किरणों जैसी है सब पर प्रकाश करती है। ज्ञान सार्वजनिक है इस पर कोई कब्जा नहीं कर सकता।



That which shakes the soul is real knowledge: Padma Shri Dr. Kapil Tiwari

Bhopal: A special lecture by Padma Shri Dr. Kapil Tiwari was held on the birth anniversary of Dada Makhanlal Chaturvedi ji at Makhanlal Chaturvedi National University of Journalism and Communication on Friday. The program was presided over by the Vice Chancellor of the University, Vijay Manohar Tiwari. On this occasion, the annual event of cultural and sports activities of the university, Pratibha 2025, was also inaugurated. At the same time, the website of the university was relaunched. On this occasion, two newspapers published from the university, "Vikalp" and "Pahal", were also released by the Chief Guest and Vice Chancellor. Chief Guest and speaker Dr. Kapil Tiwari, an expert on Indian knowledge tradition and folk culture, decorated with Padma Shri, opened new doors of introspection and intellectual consciousness for students and teachers with his views on the topic "India: The Land of Knowledge Tradition". Dr. Kapil Tiwari said in his address that - "India's knowledge tradition is born out of centuries of penance. In this country, acquiring knowledge does not mean only information, it means self-realization." He said that today knowledge is understood as mere information, whereas real knowledge is that which shakes the soul and determines the direction of life. Expressing concern over the education system, he said that - "90 percent of the people in our country are not able to recognize their potential. In educational institutions, this question is not even asked that who are you and what have you come to do on this earth." He said that the real objective of education should be to give direction to man according to his nature and talent. Dr. Tiwari, while referring to the ideological traditions of India - such as Advaita, Buddhist philosophy, folk traditions and tribal life - said that all this is a proof of the ideological diversity and depth of India. He explained the tradition of thinkers like Buddha, Nagarjuna etc. and said that - "Knowledge is not the inheritance of any one caste or class, it is for everyone like the light of the sun.

एमसीयू में व्याख्यान एवं प्रतिभा २०२५ का भव्य शुभारंभ

जो आत्मा को झकझोर दे, वह वास्तविक ज्ञान : पद्मश्री डॉ कपिल तिवारी

अमन संगाट/सीपाठ

भारतीय विश्वविद्यालय में शुरू हो गए प्रवक्षणों एवं संचार विश्वविद्यालय की जर्ती पर पद्मश्री डॉ. कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपूर्ण गतिविधि परिषद् विचारक ने की। इस असास पर विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो सम्बन्धित पर विकल्प एवं याहू का भी विमोचन मुख्य अधिकारी एवं कुलपूर्ण द्वारा किया गया। मुख्य अधिकारी एवं पद्मश्री के अवकृत भासीय जन परिवार और लोक संसदि के महाराजा डॉ. कपिल तिवारी ने भारत जन परिवार की भूमि विषय पर अपने विचारों से छान्नी और विविध चेतना के नए द्वारा खोले। डॉ. कपिल तिवारी ने अपने दृष्टिभूमि में कहा कि-भारत जनकारी नहीं, आध्योग्य है। इस देश में जन अवैन का अर्थ केवल जनकारी नहीं, आध्योग्य है। उन्होंने कहा कि- आज जन का सूचना भर सद्व्यवहार है। जबकि वास्तविक ज्ञान वह है जो आत्मा को झकझोर दे और जीवन की दिशा तर कर दे। उन्होंने शिक्षण व्यवस्था पर चिंता अवश्य करते हुए कहा कि- हमारे देश में ९० प्रतिशत लोग अपनी संविधानशासी की ज्ञानवादी ही नहीं। शिक्षा संस्थानों में यह प्रत्येक ही नहीं पूछ जाता कि तुम कौन हो और माम करने के लिये इस भवती पर आए हो। उन्होंने कहा कि मनुष्य को उसकी प्रकृति और प्रतिभा के अनुसार दिशा देनी ही शिक्षा का असल उद्देश्य होना चाहिए। डॉ. तिवारी ने भारत की वैदिकिक परंपराओं-जैसे अद्वैत, वैदेश दर्शन, लोक परंपराएँ और जनकारी जीवन-का अवलोकन करते हुए कहा कि यह सभी भारत की वैदिक विविधा और ग्रन्थों का प्रमाण है। उन्होंने बुध, नागर्जुन आंदर चिंतनों



की परंपरा को व्याख्या की और कहा कि- ज्ञान है, यह आत्मबोध और सामाजिक चेतना का किसी एक जीति या वर्ण की बचीनी नहीं होता, यह प्रयोगशाला है। उन्होंने कहा कि वे हर महीने में एक तो सूर्य के प्रकाश की तरह सबके लिए होता है। यह डॉ. कपिल तिवारी से भेट करते हैं और भविष्य आध्योग्य और सामाजिक चेतना को प्रयोगशाला है। मैं वे स्वयं काकड़ों में जाकर विद्यार्थियों से संवाद एस्टेंसी- कुलपूर्ण विजय मनोदृष्ट तिवारी गणेश शर्कर करें। कुलपूर्ण ने छान्नी की आध्योग्य करते हुए विद्यालय समाप्ति में अपार्टिमेंट कार्यक्रम में कुलपूर्ण कहा कि वे यह संख्ये हास यहीं कहे आए हैं? और विजय मनोदृष्ट तिवारी ने व्याख्या भाषण में कहा कि हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है? कार्यक्रम का यह विश्वविद्यालय के नव दिवियों द्वारा का केंद्र नहीं संचालन विवेक सामरीकरण एवं डॉ. अस्ल कुमार

अंतर्मंडल किंकरां की भी शुरूआत हुई। जिसमें विद्युत खेल प्रकार अल भाग विशेष रूप से शामिल हुए।

कुलपूर्ण विजय मनोदृष्ट तिवारी ने सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर खेल सम्बन्धक डॉ. सतेंद्र जहारिया, तर खेल सम्बन्धक डॉ. मनोज पटेल एवं लिलक उमसित थे।

प्रतिभा २०२५ में खेल कूट गतिविधियों के

व्याख्यान एमसीयू में प्रतिभा 2025 का भव्य शुभारंभ, वेबसाइट हुई रीलांच जो आत्मा को झकझोर दे, वह वास्तविक ज्ञान : डॉ. तिवारी

प्रवित्रक वाणी, भोपाल

मार्खनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में शुक्रवार को दादा मार्खनलाल चतुर्वेदी की जयंती पर पद्मश्री डॉ. कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की सार्कृतिक एवं खेलकूट गतिविधियों के वार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 का शुभारंभ भी किया गया। वहीं विश्वविद्यालय की वेबसाइट को रीलांच किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो समाचार पत्र विकल्प एवं पहल का भी विमोचन मुख्य अंतिथि एवं कुलगुरु द्वारा किया गया। मुख्य अंतिथि एवं पहल का पद्मश्री



से अनंतकृत भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक संस्कृति के मर्मज्ञ डॉ. कपिल तिवारी ने 'भारत: ज्ञान परंपरा की भूमि' विषय पर अपने विचारों से छात्रों और शिक्षकों के लिए आत्मचिंतन और बौद्धिक चेतना के नए द्वारा खोले। डॉ. कपिल तिवारी ने अपने उद्घोषन में कहा कि 'भारत की ज्ञान परंपरा सदियों की तपस्या से

जन्मी है। इस देश में ज्ञान अर्जन का अर्थ केवल ज्ञानकारी नहीं, आत्मबोध है।' उहोने कहा कि आज ज्ञान को सूचना भर समझ लिया गया है, जबकि वास्तविक ज्ञान वह है जो आत्मा को झकझोर दे और जीवन की दिशा तय कर दे। उहोने शक्षण व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि 'हमारे देश में 90 प्रतिशत

लोग अपनी संभावनाओं को पहचान ही नहीं पाते। शिक्षा संस्थानों में यह प्रसन्न ही नहीं पूछ जाता कि तुम कौन हो और क्या करने के लिए इस धरती पर आ ए हो।' उहोने कहा कि मनुष्य को उसकी प्रकृति औं प्रतिभा के अनुसार दिशा देना ही शिक्षा का असल उद्देश्य होना चाहिए। डॉ. तिवारी ने भारत की वैचारिक परंपराओं—जैसे अद्वैत, बौद्ध दर्शन, लोक परंपराएं और जनजातीय जीवन—का उल्लेख करते हुए कहा कि यह सब भारत की वैचारिक विविधता और गहराई का प्रमाण है। उहोने बुद्ध, नागार्जुन आदि चित्रकों की परंपरा की व्याख्या की और कहा कि 'ज्ञान किसी एक जाति या वर्ग की बोपाती नहीं होता, यह तो सूर्य के

आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है

एमसीयू : कुलगुरु

गणेश शंकर विद्यार्थी सभानार में आयोजित कार्यक्रम में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वामत भाषण में कहा कि 'यह विश्वविद्यालय केवल डिग्रिया देने का केंद्र नहीं है, यह आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है।' उहोने कहा कि वे हर महीने में एक बार डॉ. कपिल तिवारी से भेट करते हैं और भविष्य में वे स्वयं कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों से सवाद करेंगे। कुलगुरु ने छात्रों को आत्ममंत्र करते हुए कहा कि वे यह सोचें 'हम यहाँ वयों आए हैं? और हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है?' कार्यक्रम का संचालन विवेक सादरीकर एवं डॉ. अरुण कुमार खोबरे ने किया।

जो आत्मा को झकझोर दे, वही है सच्चा ज्ञान: डॉ. तिवारी

भौमिका। माखनलाल चतुर्वेदी शास्त्रीय पठकारिता एवं सच्चा विश्वविद्यालय (एमसीयू) में ददा माखनलाल चतुर्वेदी जयनी के अवसर पर एक विशेष व्याख्यान एवं प्रतिभा 2025 के उद्घाटन समारोह का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अंतिथ रहे पदाश्री डॉ. कपिल तिवारी, जो भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक संस्कृति के गहरे मर्मज माने जाते हैं। गणेश शंकर विद्यार्थी सभागार में आयोजित इस भव्य आयोजन की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति विजय मनोहर तिवारी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की नई वेबसाइट का पुनः शुभारंभ (री-लॉन्च) किया गया, साथ ही एमसीयू से प्रकाशित होने वाले दो समाचार पत्र— विजल्प एवं 'पहल' का विमोचन भी किया गया।

भारत की ज्ञान परंपरा पर डॉ. कपिल तिवारी का प्रेरक व्याख्यान

'भारत- ज्ञान परंपरा की धर्मि विषय पर बोलते हुए' पदाश्री डॉ. कपिल तिवारी ने कहा कि ज्ञान केवल



सच्चना नहीं, आत्मा का जागरण है। जो विचार या अनुभव भन को झकझोर दे, वही वास्तविक ज्ञान है। उन्होंने आधुनिक शिक्षा प्रणाली की सीमाओं पर प्रश्न उठाते हुए कहा कि हमारे देश में 90 प्रतिशत दुवा अपनी क्षमताओं और जीवन के उद्देश्य को पहचान ही नहीं पाते। शिक्षा का मूल उद्देश्य होना चाहिए— मनुष्य को उसकी प्रकृति और प्रतिभा के अनुरूप मार्गदर्शन

देना। डॉ. तिवारी ने भारतीय वैचारिक परंपराओं जैसे अहृत वेदांत, बौद्ध दर्शन, लोक पंथरां और जनजातीय जीवन का संदर्भ देते हुए, कहा कि ज्ञान किसी जाति या वर्ग की व्यौती नहीं, यह सर्व की रोशनी की तरह सभी के लिए है। एमसीयू आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है। कुलपति विजय मनोहर तिवारी विश्वविद्यालय के कुलगुरु

विजय मनोहर तिवारी ने अपने उद्घाटन भा। 2/8 हा विएमसीयू केवल डिग्री प्रदान करने वाला संस्था नहीं, बल्कि यह एक आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है। उन्होंने छात्रों को प्रेरित करते हुए कहा कि इस विद्यार्थी को यह सोचना चाहिए कि वह यहाँ ज्ञान भी किया है और जीवन का असल दृढ़रूप क्या है। उन्होंने यह भी घोषणा की कि वे प्रत्येक माह छात्रों से सौधे संबाद करेंगे और कक्षाओं में स्वयं भी उपस्थित रहेंगे।

प्रतिभा 2025 का शुभारंभ और

खेल प्रतियोगिताएं

एमसीयू की वार्षिक संस्कृति एवं खेलकूट प्रतियोगिता प्रतिभा 2025 का शुभारंभ भी इसी अवसर पर किया गया। फिरेंट ट्रॉफीट यी शुभारंभ विशेष लोक प्रबोध अवसर शर्तों की उपलब्धि में हुई। फिराउडियों की मुलाधि विजय मनोहर तिवारी ने मुकाबलाएँ दी। खेल समालयका डॉ. सरोत डिविया, सह-समालयका डॉ. जलोज पटेल और अलेक शिखकुण्णा भी इस आयोजन में उपस्थित रहे।

जो आत्मा को झकझोर दे, वह वास्तविक ज्ञान : पद्मश्री डॉ कपिल तिवारी

एमसीयू में व्याख्यान एवं प्रतिभा 2025 का भव्य शुभारंभ

सर्व स्टोरी संवाददाता भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में शुक्रवार को दादा माखनलाल चतुर्वेदी जी की जयंती पर पद्मश्री डॉ. कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों के वार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 का शुभारंभ भी किया गया। वहाँ विश्वविद्यालय की बेबसाइट को रीलांच किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो समाचार पत्र विकल्प एवं पहल का भी विमोचन मुख्य अंतिथि एवं कुलगुरु द्वारा किया गया। मुख्य अंतिथि एवं वक्ता पद्मश्री से अलंकृत भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक संस्कृति के मर्मज्ञ डॉ. कपिल तिवारी ने भारत-ज्ञान परंपरा की भूमि विषय पर अपने विचारों से छात्रों और शिक्षकों के लिए आत्मचिंतन और बौद्धिक चेतना के नए द्वार खोले। डॉ. कपिल तिवारी ने अपने उद्घोषण में कहा कि—भारत की ज्ञान परंपरा सदियों की तपस्या से जन्मी है। इस देश में ज्ञान अर्जन का अर्थ केवल जानकारी नहीं, आत्मबोध है। उन्होंने कहा कि आज ज्ञान को सूचना भर समझ लिया गया है, जबकि वास्तविक ज्ञान वह है जो आत्मा को झकझोर दे और जीवन की दिशा तय कर दे।



प्रकाश की तरह सबके लिए होता है। उसके बाद गणेश शंकर विद्यार्थी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वागत भाषण में कहा कि यह विश्वविद्यालय केवल डिग्रियाँ देने का केंद्र नहीं है, यह आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है उन्होंने कहा कि वे हर महीने में एक बार डॉ. कपिल तिवारी से भेट करते हैं और भविष्य में वे स्वयं कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों से संवाद करेंगे। कुलगुरु ने छात्रों को आत्मर्ंथन करते हुए कहा कि वे यह सोचेंहम यहाँ क्यों आए हैं? और हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है? कार्यक्रम का संचालन श्री विवेक सावरीकर एवं डॉ. अरुण कुमार खोबरे ने किया। संयोजन सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. उर्वशी परमार द्वारा किया गया। आभार प्रदर्शन विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अविनाश वाजपेयी ने किया।

खेल प्रतियोगिताओं का शुभारंभ:

प्रतिभा 2025 में खेल कूद गतिविधियों के अंतर्गत क्रिकेट की भी शुरुआत हुई। जिसमें वरिष्ठ खेल पत्रकार अक्षत शर्मा विशेष रूप से शामिल हुए। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर खेल समन्वयक डॉ. सतेंद्र डहरिया, सह खेल समन्वयक डॉ. मनोज पटेल एवं शिक्षक उपस्थित थे।

जो आत्मा को झकझोर दे, वह वार्तविक ज्ञान : पद्मश्री डॉ कपिल तिवारी

ख्रवाजा एक्सप्रेस संवाददाता

भोपाल । माखनलाल चतुर्वेदी राशीय पत्रकरिता एवं सचार विश्वविद्यालय में शुक्रवार को दादा माखनलाल चतुर्वेदी जी की जयंती पर पद्मश्री डॉ. कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों के वार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 का शुभांग भी किया गया। वहीं विश्वविद्यालय की वेबसाइट को रीलांच किया गया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो समाचार पत्र विकल्प एवं पहल का भी विमोचन मुख्य अंतिथि एवं कुलगुरु द्वारा किया गया। मुख्य अंतिथि एवं वक्ता पद्मश्री से अलंकृत भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक संस्कृति के मर्मज्ञ डॉ. कपिल तिवारी ने भारत ज्ञान परंपरा की भूमि- विषय पर अपने विचारों से छात्रों और शिक्षकों के लिए आत्मचंतन और बौद्धिक चेतना के नए द्वार खोले। डॉ. कपिल तिवारी ने अपने उद्घोषन में कहा कि- भारत की ज्ञान परंपरा सदियों की तपस्या से जन्मी है। इस देश में ज्ञान अर्जन का अर्थ के बल जानकारी नहीं, आत्मबोध है। उन्होंने



एमसीयू में व्याख्यान एवं प्रतिभा 2025 का भव्य शुभांग

कहा कि आज ज्ञान को सूचना भर समझ लिया गया है, जबकि वास्तविक ज्ञान वह है जो आत्मा को झकझोर दे और जीवन की दिशा तय कर दे। उन्होंने शिक्षण व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि- हमारे देश में 90 प्रतिशत लोग अपनी सभावनाओं को पहचान ही नहीं पाते। शिक्षा संस्थानों में यह प्रश्न ही नहीं पूछा जाता कि तुम कौन हो और क्या करने के लिए इस धरती पर आए हो। उन्होंने कहा कि

गणेश शंकर विद्यार्थी सभागर में आयोजित कार्यक्रम में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वागत भाषण में कहा कि +यह विश्वविद्यालय के बल डिग्रियाँ देने का केंद्र नहीं है, यह आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है। उन्होंने कहा कि वे हर महीने में एक बार डॉ. कपिल तिवारी से भेट करते हैं और भविष्य में वे स्वयं कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों से संवाद करेंगे। कुलगुरु ने छात्रों को आत्ममंथन करते हुए कहा कि वे यह सोचें हम यहाँ क्यों आए हैं? और हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है? कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. उर्वशी पमार एवं डॉ. अरुण कुमार खोबरे ने किया। आभार प्रदर्शन विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अविनाश वाजपेयी द्वारा किया गया। खेल प्रतियोगिताओं का शुभांग

प्रतिभा 2025 में खेल कूद गतिविधियों के अंतर्गत क्रिकेट की भी शुरुआत हुई। जिसमें वरिष्ठ खेल पत्रकार अक्षत शर्मा विशेष रूप से शामिल हुए। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर खेल समन्वयक डॉ सरेन्द्र डहरिया, सह खेल समन्वयक डॉ मनोज पटेल एवं शिक्षक उपस्थित थे।

एमसीयू में व्याख्यान एवं प्रतिमा 2025 का भव्य शुभारंभ

जो आत्मा को झाकझोर दे, वह वास्तविक ज्ञान : पद्मश्री डॉ कपिल तिवारी

बौद्धि ■ अनुष्ठान

बहुनायाल चतुर्वेदी गान्धीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में शुक्रवार को दो दिन मुख्य अतिथि एवं कुलगुरु द्वारा किया गया।

परंपरागत तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कर्तव्रय की अशक्ता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विचय मनेहर तिवारी ने को। इस अन्वर गर विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों के वार्षिक आयोजन और बैंडिंग चेतना के नए द्वारा खोले। डॉ. कपिल तिवारी ने अपने व्योधन में कहा कि-भारत की ज्ञान परंपरा से जन्मी वेबसाइट को रीनार्च किया गया। इस

अन्वर पर निश्चन्द्रियालय में विकलने वाले दो समचार पत्र विकल्प एवं पहल का भी विमोचन मुख्य अतिथि एवं कुलगुरु द्वारा किया गया।

मुख्य अतिथि एवं वक्तव्य पत्रियों से अलंकृत भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक संस्कृति के मर्मजे डॉ. कपिल तिवारी ने भारत-ज्ञान परंपरा की भूमि विचय पर आपने चिचारों से छोड़ों और तिवारी के लिए आत्मविजेता और बैंडिंग चेतना के नए द्वारा खोले। डॉ. कपिल तिवारी ने अपने व्योधन में कहा कि-भारत की ज्ञान परंपरा से जन्मी



इस देश में ज्ञान अजेन का अर्थ केवल ज्ञानकारी नहीं, आस्मान्ध है। उन्होंने कहा कि आज ज्ञान को सूचना भर समझ लिया जाना है, जबकि वास्तविक ज्ञान वह है जो आत्मा के

पाते। जिधा संस्थानों में यह प्रश्न ही नहीं पूछा जाता कि तुम कौन हो और क्या कहने के लिए इस परती पर आए हो। उन्होंने कहा कि-मनुव को उसकी प्रयत्नि और प्रतिभा के अनुसार दिया देना ही शक्ता का असल उद्देश्य है नोना चाहिए। डॉ. तिवारी ने भारत की वैचारिक परंपराओं- जैसे अद्वा, वांद दर्शन, लोक गणाण् और जनजातीय जैवन- का उल्लेख करते हुए कहा कि-यह सब भारत की वैचारिक विविधता और गहराई का प्रताप है।

उन्होंने युद्ध, नागर्जुन आदि चित्रकौ

झाकझोर दे और जीवन की दिशा तय कर दे। उन्होंने शिक्षण व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि-

हमारे देश में 90 प्रतिशत लोग अन्यीं

संभावनाओं के पहचान ही नहीं

करते हैं और भविष्य में वे स्वयं

कलाओं में जाकर विद्यार्थियों से

संवेदन करें।

कि- ज्ञान किसी एक जाति या न्याय की अपीली नहीं होता, यह तो सूची के प्रक्रम की तरह सबके लिए होता है।

गणेश शंकर विद्यार्थी समाज में आयोजित जारीनाम में चुलालुक विजय मनोहर तिवारी ने स्वामी भाषण में कहा कि यह विश्वविद्यालय के लिए विधियाँ देने का कोंद्र नहीं है, यह आनंद है। और रामायाजक चेतन की प्रयोगशाला है उन्होंने कहा कि वे हर सहीने में एक बार डॉ. कपिल तिवारी में भेंट करते हैं और भविष्य में वे स्वयं कलाओं में जाकर विद्यार्थियों से संवेदन करें।

एमसीयू में व्याख्यान
एवं प्रतिभा 2025
का भव्य शुभारंभ

जो आत्मा को झकझोर दे, वह वार्तविक ज्ञान : पद्मश्री डॉ कपिल तिवारी



आम सभा, भोपाल। माधवनलाल चतुर्वेदी शास्त्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में शुभारंभ को दादा माधवनलाल चतुर्वेदी जी को जयते पर प्रकाशी डॉ. कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की संस्थानिक एवं खेलकूट गतिविधियों के बार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 का शुभारंभ भी किया गया। वर्ती विश्वविद्यालय की वेबसाइट को रीलांच किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो समाचार पत्र %विकल्प% एवं %पहल% का भी विमोचन मुख्य अंतिष्ठि एवं कूलगुरु द्वारा किया गया। मुख्य अंतिष्ठि एवं वक्ता पद्मश्री से अलंकृत भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक संस्कृति के मंत्रज्ञ डॉ. कपिल तिवारी ने %भारत ज्ञान परंपरा की भूमिका विषय पर अपने विचारों से छात्रों और

शिक्षकों के लिए आत्मचित्तन और बीड़िक चेतना के नए द्वार खोले। डॉ. कपिल तिवारी ने अपने झोड़न में कहा कि—%भारत की ज्ञान परंपरा सहितों की तपस्या से जन्मी है। इस देश में ज्ञान अर्जन का अर्थ केवल ज्ञानकरी नहीं, आमतौर है।% उन्होंने कहा कि आज ज्ञान को सूचना भर समझ लिया गया है, जबकि वास्तविक ज्ञान वह है जो आत्मा को झकझोर दे और जीवन की दिशा तय कर दे। उन्होंने शिक्षण व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि—हमारे देश में 90 प्रतिशत लोग अपनी संभावनाओं को पहचान ही नहीं पाते। शिक्षा संस्थानों में यह प्रश्न ही नहीं पूछा जाता कि तुम कौन हो और वया करने के लिए इस धरती पर आए हो। उन्होंने कहा कि मुख्य को उसकी प्रकृति और प्रतिभा के अनुसार दिशा देना ही शिक्षा का असल उद्देश्य होना चाहिए। डॉ. तिवारी ने भारत की वैचारिक परंपराओं—जैसे अहिं, बोढ़ दर्शन, लोक

परंपराएं और जनजातीय जीवन—का उल्लेख करते हुए कहा कि यह सब भारत की वैचारिक विविधता और महाईं ह का प्रमाण है। उन्होंने बुढ़, नामांकन असदि वित्तकों की परंपरा की व्याख्या की और कहा कि—%ज्ञान किसी एक जाति या वर्ग की वैपीड़ी नहीं होता, यह तो सूर्य के प्रकाश की तरह सबके लिए होता है।

आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है परमाणुयूः कूलगुरु विजय मनोहर तिवारी: गणेश शंकर विद्यार्थी सभापाल में आयोजित कार्यक्रम में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वामान भाषण में कहा कि यह विश्वविद्यालय केवल विद्युतियों देने का केंद्र नहीं है, यह आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है। उन्होंने कहा कि ये हर महीने में एक बार डॉ. कपिल तिवारी से भेट करते हैं और भविष्य में वे स्वयं कश्शाओं में जाकर विद्यार्थियों से संवाद करें।

सातवां पोषण पखवाड़ा 8
से 22 अप्रैल तक

आम सभा, भोपाल। प्रदेश में व्यक्तिगत और समृद्धिवाली स्तर पर व्यवहार प्रतिवेदन के माध्यम से कृपापण को कम करने के लिए पोषण अभियान चलाया जा रहा है। प्रत्येक वर्ष पोषण अभियान के तहत पोषण को जन अंदोलन का स्वरूप देने के ऊर्जस से पोषण पखवाड़ा मनाया जाता है। इस पर सातवां पोषण पखवाड़ा 8 से 22 अप्रैल तक मनाया जाएगा। केंद्रीय महिला बाल विकास मंत्रालय द्वारा %जीवन के प्रथम 1000 दिवान% पोषण ट्रैकर में लाभार्थी मॉड्युल को लोकप्रिय बनाने व्यापक प्रचार-प्रसार, सम्मान आपारित पोषण प्रबोधन मॉड्युल के माध्यम से कृपापण का प्रबोधन तथा बच्चों में जीवोंपैकी दूर करने के लिए स्वरूप जीवन शैली को अपने पर बाल जैसे थीम पर केंद्रित विभिन्न कार्यक्रमों को आयोजित करने के निर्देश दिए गए हैं। पोषण पखवाड़ा के दौरान आमनवाड़ा केंद्र सेक्टर, परियोजना एवं जिला स्तर की गतिविधियों में स्थानीय प्रयोग संसाधनों को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण, समृद्धिवाली जागरूकता और पोषण संवेदनशील कार्यक्रम जैसे आयोजन किए जाएंगे। आमनवाड़ा केंद्रों में दैनिक गतिविधियों को तिथिवार थीम आधारित कैलेंडर तैयार किया गया है। सभी जिलों में पखवाड़ा के दौरान साइकिल रैली, पोषण रैली, प्रभात फेरी, नार्मदांती महिलाओं और शासी माता एवं किशोरी वालिकाओं के साथ पोषण ट्रैकर में हितग्राही मॉडल पर समूह चर्चा, कृपापण बच्चों की स्वास्थ्य जांच, एनोमिया जागरूकता शिविर का आयोजन किया जाएगा।

पत्रकारिता विवि में जयंती प्रसंग पर व्याख्यान का आयोजन

जो जीवन की दिशा तय करे भारत में वही है ज्ञान

संस्कृति और ज्ञान की उत्तमता, भारत

सुर्वसिद्ध कवि, पञ्चमर एवं स्वतंत्रता सेवकीय पं. महानगरपाल नवाज़ेली को जयंती के अवसर पर महानगरपाल नवाज़ेली पत्रकारिता विवि में स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान में लोकानन्दन भवित्व पूर्वी कवियों ने 'भरत: ज्ञान परमाणु' शुभ्र विषय पर व्याख्यान दिया। ज्ञान की अवधारणा विवि के कुलत्तुर विद्युत मन्दिर के नवाज़ेली ने कहा कि भारत की ज्ञान परमाणु उद्देश्य ही है विषय। इस विद्युती ने भारत की नवाज़ेली की समर्पण से जबों है। इस देश में ज्ञान भ्रन्ति का अर्थ केवल ज्ञानकर्ता नहीं, अज्ञानकर्ता है। उन्होंने कहा कि आज ज्ञान

को मुख्य भर समाज लिया गया है, जबकि ज्ञानकर्ता ज्ञान का है जो आजका को इनकार दे और ज्ञानकर्ता विवितात्मकर देते हैं। उन्होंने विश्वक व्याख्यान पर जितना व्यापक करते हुए कहा कि हमें देश में 90 प्रतिशत लोग अपनी संभावनाओं को पराया ही नहीं पाते। शिल्प व्यवसाय में यह इन्हीं ही नहीं पाते। शिल्प व्यवसाय के लिए इन घटते पर आए हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य को उनकी माझी और जीवित के अनुसार दिसा देना ही लिया कि असल विविती ने कहा कि भारत की ज्ञान परमाणु वैज्ञानिक परमाणुओं—जैसे आइट, बैड दर्शन, लोक परंपराएँ और जनजातीय ज्ञान पर काले उल्लेख करते हुए कहा कि यह



जो ज्ञानी लोग होते, यह ही सूची के प्रकाश की तरफ सर्वेक्षण होते हैं। कार्किम का संचालन विषयक सवारीकरण एवं दौरा, अस्थण कुमार शोधने विषय का योग्यता संस्कृतिलिपि सम्बन्धित है। उन्होंने प्रश्न द्वारा दिया गया। आखर प्रश्नोंने विश्वविद्यालय के कुलसंस्थापक डॉ. अविनाश चावलेन्हान ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की सम्प्रकाशिक एवं संवित्तीय नीतियोंपर के विषय के अधिक अध्ययन की उम्मीद की ज्ञानपूर्ण विषयाएँ देखी जाएं गए। वहीं विश्वविद्यालय को वेदों नामी है, यह आपांकोष और साम्बन्धिक चेतना की प्रतीकमात्रा है।

उन्होंने कहा कि ये हर महीने में एक बार तीन कालिन लियारों से भेट करते हैं और विषय में ये स्वयं कवाहों में जाकर विषयाएँ से संबंध करते हैं। कुलसूक्त ने जातों से कहा कि यह सोचे हर पार्ष जानी आए हैं? और हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है।

जो आत्मा को झकझोर दे, वह वास्तविक ज्ञान : पद्मश्री डॉ कपिल तिवारी

एमसीयू में व्याख्यान एवं प्रतिभा 2025 का भव्य शुभारंभ



भोपाल खुलासा सुरेश आचार्य

भोपाल : माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में शुक्रवार को दादा माखनलाल चतुर्वेदी जी की जयती पर पद्मश्री डॉ. कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों के वार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 का शुभारंभ भी किया गया। वही विश्वविद्यालय की वेबसाइट को रीलांच किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो समाचार पत्र "विकल्प" एवं "पहल" का भी विमोचन मुख्य अतिथि एवं कुलगुरु द्वारा किया गया।

मुख्य अतिथि एवं वक्ता पद्मश्री से अलंकृत भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक संस्कृति के मर्मज्ञ डॉ. कपिल तिवारी ने "भारत: ज्ञान परंपरा की भूमि" विषय पर अपने विचारों से छात्रों और शिक्षकों के लिए आत्मविनेन और बौद्धिक चेतना के नए द्वार खोले।

डॉ. कपिल तिवारी ने अपने उद्घोषण में कहा कि—"भारत की ज्ञान परंपरा सदियों की तपस्या से जन्मी है। इस देश में ज्ञान अर्जन का अर्थ केवल जानकारी नहीं, आत्मबोध है।" उन्होंने कहा कि आज ज्ञान को सूचना भर समझ लिया गया है, जबकि वास्तविक ज्ञान वह है जो आत्मा को झकझोर दे और जीवन की दिशा तय कर दे। उन्होंने शिक्षण व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि— "हमारे देश में 90 प्रतिशत लोग अपनी संभावनाओं को पहचान ही नहीं पाते। शिक्षा संस्थानों में यह प्रश्न ही नहीं पूछा जाता कि

■ तुम कौन हो और क्या करने के लिए इस धरती पर आए हो।"

कहा कि मनुष्य को उसकी प्रकृति और प्रतिभा के अनुसार दिशा देना ही शिक्षा का असल उद्देश्य होना चाहिए। डॉ. तिवारी ने भारत की वैचारिक परंपराओं—जैसे अद्वैत, बौद्ध दर्शन, लोक परंपराएं और जनजातीय जीवन—का उल्लेख करते हुए कहा कि यह सब भारत की वैचारिक विविधता और गहराई का प्रमाण है। उन्होंने बृहू, नागार्जुन आदि चितकों की परंपरा की व्याख्या की और कहा कि—"ज्ञान किसी एक जाति या वर्ग की बौपौती नहीं होता, यह तो सूर्य के प्रकाश की तरह सबके लिए होता है।"

आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है एमसीयू : कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी।

गणेश शंकर विद्यार्थी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने स्वागत भाषण में कहा कि "यह विश्वविद्यालय केवल डिग्रीयाँ देने का केंद्र नहीं है, यह आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला है।" उन्होंने कहा कि वे हर महीने में एक बार डॉ. कपिल तिवारी से मेंट करते हैं और भविष्य में वे स्वयं कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों से संवाद करेंगे। कुलगुरु ने छात्रों को आत्ममंथन करते हुए कहा कि वे यह सोचें "हम यहाँ क्यों आए हैं?" और "हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है?"

कार्यक्रम का संचालन श्री विवेक सावरीकर एवं डॉ. अरुण कुमार खोबरे ने किया। संयोजन सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. उर्वशी परमार द्वारा किया गया। आभार प्रदर्शन विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अविनाश वाजपेयी ने किया।

खेल प्रतियोगिताओं का शुभारंभ:

प्रतिभा 2025 में खेल कूद गतिविधियों के अंतर्गत क्रिकेट की भी शुरुआत हुई। जिसमें वरिष्ठ खेल पत्रकार अक्षत शर्मा विशेष रूप से शामिल हुए। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर खेल समन्वयक डॉ सतेंद्र डहेरिया, सह खेल समन्वयक डॉ मनोज पटेल एवं शिक्षक उपरियत थे।

एमसीयू में व्याख्यान एवं प्रतिभा 2025 का भव्य शुभारंभ

जो आत्मा को झकझोर दे, वह वास्तविक ज्ञान : पद्मश्री डॉ कपिल तिवारी

अपना संचय/संग्रह

मार्गदर्शक चौपाई द्योगी पारविधान एवं संस्कृत विभाषणात में शुभ ग्रन्थ को दादा मार्गदर्शक चौपाईद्योगी को जयंती पर फूल देते हैं, कलाप द्योगीरा का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम को अप्रत्यक्ष विभाषणके लिए कलाप विधान मालिनी तिरोंनि को। इस अवसरे पर विभाषणात्मका सामाजिक प्रयोग संस्कृत-गतिविधिकों के बारांके आयोगीनि प्रियंगा 2025 का शुभार्पण भी किया गया। वहीं विभाषणात्मकों के बोकारोंको शोभांगी किया गया। इस अवसरे पर विभाषणात्मकों ने निकाली शाही दो विभाषणात्मकों पर विभाषण एवं एक प्रकाश को भी विभाषण मूल अवधिएँ एवं कलापुरुष द्वारा किया गया। मूल विभाषण एवं एक प्रकाश को अलंकारी भास्ती नाम दिया गया। और उनको संकेतके मामता भी कर्तव्य विभाषणोंने भासा जाग एवं प्रथाको भी प्रभाव विभाषण पर दिया गया। और आजकल विभाषण और बीड़ीकूप तेलन के नए द्वारा खोले हैं। डॉ. कर्णपील कुमार ने अपने उद्घाटनमें कहा कि- भारतीय जीवन परामर्श संस्कृतीको व्यापक रूप से लाना। इस रूप में जाग अवसरा को अपने केवल जागरूकी नहीं, आवासप्रद है। उद्घाटन कहा कि आज ताको नवाचन रम विभाषण है, अप्रत्यक्ष वायाचार जाग वह है जो आजकल को झटकाते हैं और जीवन को दिखा रखता करता है। विभाषण एवं शिक्षा व्याख्यान एवं रचना किया जाना चाहिए। इसमें संस्कृतात्मकों को व्यापक हो नहीं सकता। विभाषण संस्कृतात्मकों को यह प्रश्न नहीं पूछता कि तुम कौन हो और अब कैसे करते हैं लिये इस छाती पर आज हो। इन्होंने कहा कि मनुष्योंको उसको पूछती और प्रतिक्रिया के अन्दर दिल देने ही व्यापका का असल लक्ष्य होना चाहिए। इसे जानता है। द्योगीरा ने भरत को बीचारा करका परामर्शदाता-हो दीजिए। अतः, बढ़ाव देना, लोक परामर्श और जनताका जीवन को बीचारा करको तुम का किया है यह सब व्यापक विभाषण एवं तात्परा का प्रयाप है। उन्होंने दुःख, नाराज़ी अतः चिन्ता



खोये ने किया। संयोजन सांस्कृतिक समव्यक्त और उच्चर परमार द्वारा किया गया। आधार प्रदर्शन विभिन्नताएँ के कुलसंबिध और अविनाश यापेयी ने किया।

किंकेट की भी सूखाता हुई। विद्यमें बरिधर विद्यारथ असता शार्प विलेप कृप से शामिल हुए। विजय मनोहर तिवारी ने सभी खिलाड़ियों का माननार्थ दी। इस असर पर खेल समन्वयक और डोरिया, सह खेल समन्वयक तीन मनोज ने विकास उपस्थिति दी।

एमसीयू में प्रतिभा 2025 का का शुभारंभ, व्याख्यान हुआ

भोपाल। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि (एमसीयू) में शुक्रवार को माखनलाल चतुर्वेदी की जयंती पर पद्मश्री डॉ. कपिल तिवारी का व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने विवि को 'आत्मबोध और सामाजिक चेतना की प्रयोगशाला' बताया। इस अवसर पर प्रतिभा 2025 का शुभारंभ हुआ, साथ ही विविकी वेबसाइट का रीलॉन्च और समाचार पत्र 'विकल्प' व 'पहल' का विमोचन किया गया।

**मानवनालाल चतुर्वेदी की जयंती पर
पद्मश्री डॉ. कपिल तिवारी ने कहा-**

खबरेश्वरदाता ■ भोपाल
पद्मश्री डॉ. कपिल तिवारी ने कहा है कि मनुष्य को उसकी प्रकृति और प्रतिभा के अनुसार दिशा देना ही शिक्षा का असल ज़रूर्य होना चाहिए। वह मानवनालाल चतुर्वेदी की जयंती पर व्याख्यान समारोह में बोल रहे थे। एसटीयू द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यापना करते हुए, विष्णुविद्यालय के कुलगृह विजय मनोहर तिवारी भौजुद थे।

गणेश शंकर विद्यार्थी सभागार में भारतः ज्ञान परिपेका की भूमि विषय पर बोलते हुए

मनुष्य की प्रकृति व प्रतिभा के अनुसार दिशा देना शिक्षा का उद्देश्य



यहाँ डॉ तिवारी ने कहा कि जो आत्मा को इक्कश्चोर दे, वह वास्तविक ज्ञान है। भारत की ज्ञान परिपेका सदियों की तरस्या से जन्मी है। इस देश में ज्ञान अज्ञन का अध्य केवल ज्ञानकारी नहीं, आत्मवीच है। मीनूदा विद्यालय व्यवस्था पर चिंता अवल करते हुए, उन्होंने कहा कि इसारे देश में 90 प्रतिशत लोग अपनी संभवनाओं को पहचान सही नहीं पाते। शिक्षा सम्बन्धी में यह प्रश्न ही नहीं पूछा जाता कि तुम कौन हो और क्या करने के लिए इस धरती पर आए हो।

आवश्योद्य और सामाजिक वेतना की प्रवोगशाल है एसटीयू
कुलगृह विजय मनोहर तिवारी का यह वाचन कि यह विश्वविद्यालय के वर्त तिवारी देने का केंद्र नहीं है, यह आवश्योद्य और सामाजिक वेतना की प्रयोगशाल है। उन्होंने कहा कि भविष्य में वे रथय कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों से संवाद करेंगे।

यहाँ हुआ

विश्वविद्यालय की सास्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों के वार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 के इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो समाचार पत्र विकल्प एवं पहल का रिमोवन हुआ। साथ ही किंकट से खेल कूद गतिविधियों को शुरूआत हुई।

ह, इधर उस कभा अकला नहा दवा भास्तवत का पाठ सपन हुआ।

निदाशका व प्रख्यात शशान् दा. प्रत्या मूलता ह।

जात लया। नन्ह पहवा पर लबला 9.00 बज स 4.00 तक का जायगा।

एमसीयू में व्याख्यान एवं प्रतिभा 2025 का भव्य शुभारंभ

सरिता प्रवाह नेटवर्क

वीडियो | भावनलाल चतुर्वेदी गद्दीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में शुक्रवार को दवा माखनलाल चतुर्वेदी जी की जयती पर पदमभी डॉ. कर्मिल लिखारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय महोर लिखारी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक एवं खेलकूद महिलाओं के वार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 का शुभारंभ भी किया गया। वहीं विश्वविद्यालय की वेबसाईट को गोलांच किया गया। इस अवसर पर

जो आत्मा को झकझोर दे, वह वास्तविक ज्ञान : डॉ. तिवारी

विश्वविद्यालय से निकलने वाले दो समाचार एवं 'विकल्प' एवं 'पहल' का भी विमोचन मूल्य अर्थात् एवं कुलगुरु द्वारा किया गया। मूल्य अर्थात् एवं वक्ता पदमभी से अलंकृत भावती जान परपण और लोक संस्कृति के भर्मज्ज डॉ. कर्मिल लिखारी ने "भारतः जान परपण की धूमि" विषय पर अपने विचारों से छात्रों और शिक्षकों के लिए आवश्यकन और बोहिंदिक चेतना के नए द्वार खोले। डॉ. कर्मिल लिखारी ने अपने उद्घोषन में कहा कि— "भारत की जान परपण सरियों की तरफ से जयी है। इस देश में जान अर्जन का अर्थ केवल जानकारी नहीं, आवश्यक है।" उन्होंने कहा कि आज ज्ञन को



सुनना भर समझ लिख गया है, जबकि वास्तविक ज्ञान वह है जो आपको को झकझोर दे और जीवन को दिखा तर कर दे। उन्होंने शिक्षण व्यवस्था पर चिन व्यवत करते हुए कहा कि—

प्रतिशत लोग अपनी संभावनाओं को पहचान ही नहीं पाते। शिक्षा संस्थानों में यह प्रवन ही नहीं पूछा जाता कि तुम कौन हो और क्या करने के लिए इस धरती पर आए हो।" उन्होंने कहा कि मूल्य को उसकी प्रकृति और

प्रतिभा के अनुसार दिखा देना ही शिक्षा का असल औरेश होने चाहिए। डॉ. तिवारी ने भारत की वैचारिक परंपराओं—जैसे अहैतु, बौद्ध स्तर्ण, लोक परंपराएं, और जनजातीय जीवन—का ऊलेख करते हुए कहा कि वह सब भारत की वैचारिक विविधता और गतराहि का प्रमाण है। उन्होंने कुद्द मणिनृन आदि चित्रों की प्रयोग की व्याख्या की और कहा कि— "ज्ञान विस्ती एक जाति या धर्म से भेट करते हैं और भविष्य में वे सब ये ज्ञानों के जाक लिखारीयों से संवाद लेंगे। कुलगुरु ने छात्रों को आवश्यकन करते हुए कहा कि वे यह सोचें 'हम वहीं क्यों आए हैं?' और 'हमारे जीवन का दैरेश क्या है?'"

खोबरे ने किया।

हरिभूमि

epaper.haribhoomi.com
Bhopal main - 05 Apr 2025 - Page 2

जो आत्मा को झकझोट दे, वह वास्तविक ज्ञानः डॉ. तिवारी

हरिभूमि न्यूज || भोपाल

राजधानी स्थित माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि में शुक्रवार को

► एमसीयू में व्याख्यान एवं प्रतिभा 2025 का शुभारंभ, वेबसाइट को मी किया रीलांच

माखनलाल चतुर्वेदी की जयंती पर पद्मश्री डॉ. कपिल तिवारी का विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विवि के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की। इस अवसर पर विवि की

सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों के वार्षिक आयोजन प्रतिभा 2025 का शुभारंभ भी किया गया। वहीं विवि की वेबसाइट को रीलांच किया।

आत्मबोध और सामाजिक घेतना की प्रयोगशाला है

एमसीयू: तिवारी

गणेश शंकर विद्यार्थी समागम में आयोजित कार्यक्रम में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने खागत भाषण में कहा कि यह विश्वविद्यालय केवल डिग्रियां देने का केंद्र नहीं है, यह आत्मबोध और सामाजिक घेतना की प्रयोगशाला है। कुलगुरु ने छात्रों को आत्मसंख्या करते हुए कहा कि वे यह सोचें हम यहां क्यों आए हैं?

४ बं तू नू लू पू बू दू गू